सहिष्णुता

सहिष्णुता का अर्थ है–सहन करना। इसका दूसरा अर्थ है–शक्ति। दोनों अर्थों के योग से ही सहिष्णुता मनुष्य के लिए उपयोगी बनती है। शक्ति-शून्य सहिष्णुता परवशता हो सकती है, अपनी स्वतन्त्र चेतना की स्फूर्ति नहीं। जहां शक्ति के साथ सहिष्णुता होती है, वहां मानवीय स्पर्श होता है। उसमें न अहंभाव होता है और न हीनभाव विषमता है। इससे मानवीय अन्त:करण का स्पर्श नहीं होता। स्पर्श समता में है। प्रकृति का वैषम्य मानवीय सम्बन्धों को विच्छिन्न करता है। एक का दूसरे के साथ सम्बन्ध तभी हो सकता है, जबकि दोनों ओर से साम्य हो, न हीनभाव हो और न अहंभाव हो। अध्यात्मयोग और क्या है? यह साम्य ही तो अध्यात्मयोग है। आचार्य ने आत्मा, मन, मरुत् और तत्व के समतापूर्ण सम्बन्ध को ही अध्यात्मयोग माना है–'आत्ममनोमरुत्तत्वसमतायोग-लक्षणोह्यध्यात्मयोग:'।

सहिष्णुता अपेक्षित क्यों है?

जितने मनुष्य हैं, वे रुचि, विचार, संस्कार व कार्य की दृष्टि से सम नहीं हैं। वे बाह्य आकार से एक-सम न हों तो कोई कठिनाई नहीं। पर रुचि आदि सम नहीं हो तो उसमें कठिनाई पैदा होती है। उस कठिनाई का निवारण सहिष्णुता के द्वारा ही किया जा सकता है। असहिष्णुता आते ही स्थिति गड़बड़ हो जाती है। एक बार हाथ, जीभ, दांत, पैर आदि एकत्रित हुए। सबने निर्णय किया कि हम सब काम करते हैं पर पेट कुछ नहीं करता। जो हमारे साथ श्रम न करे, योग न दे, उसका हमें सहयोग नहीं करना चाहिए। सबने हड़ताल कर दी। एक दिन बीता, दो दिन बीते। हाथों में झिनझिनी आ गई, जीभ का स्वाद बिगड़ गया, मुंह थूक से भर गया, दांतों में मैल जम गया, बदबू आने लगी। तीसरे दिन सब मिले और हड़ताल समाप्त कर दी।

हर व्यक्ति में रुचि का भेद होता है। शिविर में चालीस-पचास व्यकित हैं। प्रत्येक व्यक्ति की रुचि यदि भिन्न हो तो उसके अनुसार पचास प्रकार के साग चाहिए। ऐसा सम्भव नहीं। इस असंभवता को मिटाने के लिए रुचि का सामंजस्य आवश्यक होता है। यह रुचि का सामंजस्य ही सहिष्णुता है। इसके अभाव में योग नहीं, वियोग की स्थिति हो जाती है।

संघीय शक्ति के निर्माण व सुरक्षा के लिए सहिष्णुता अत्यन्त अपेक्षित है। जो प्रमुख हो उसके लिए और अधिक। श्रीकृष्ण गणतंत्र के प्रमुख थे। अक्रूर और भोजवंशी नरेश विरोधी दल के नेता थे। वे भी कृष्ण पर तीव्र प्रहार करते थे। एक दिन कृष्ण उनकी आलोचना से खिन्न हो गए थे। इतने में नारदजी आ गए। पूछा – 'उदास क्यों हैं?' कृष्ण ने उत्तर दिया– 'इनसे मैं तंग आ गया हूं। कोई मार्ग बताइये, अब क्या करुं?' नारद ने कहा– 'दो आपदाएं होती हैं-बाह्य और आंतरिक। आपके सामने आंतरिक आपदा है। बाह्य आपदा को युक्ति-शस्त्र दूर कर सकता है। आंतरिक आपदा में शस्त्र काम नहीं आता।' 'तो फिर क्या किया जाए?' तब नारद ने अनायास शस्त्र से उनकी जीभ बन्द करने की सलाह दी–

'अनायसेन शस्त्रेन, मृदुना हृदयच्छिदा।
जिह्वामुद्धर सर्वेषां, परिमृज्यानुमृज्य च।'

शस्त्र एक ही प्रकार का नहीं होता। बादशाह ने बीरबल से पूछा– 'शस्त्र क्या है?' बीरबल ने उत्तर दिया– 'अवसर'। बादशाह ने कहा– 'क्या कह रहे हो? तलवार, भाला, तोप– ये तो शस्त्र हो सकते हैं पर अवसर कैसे?' बीरबल ने कहा– 'कभी प्रमाणित करूंगा।' एक दिन बादशाह की सवारी निकल रही थी। हाथी उन्मत्त हो दौड़ने लगा। बीरबल ने आगे बढ़ चारो तरफ देखा, एक कुत्ते के सिवाय कुछ नहीं था। तत्काल उसने कुत्ते की टांग पकड़कर घुमाया और हाथी पर दे मारा। हाथी वापस मुड़ गया। कुत्ता क्या शस्त्र है? पर अवसर था, कुत्ता शस्त्र बन गया। शास्त्र भी कभी-कभी शस्त्र बन जाते हैं। शास्त्र और शस्त्र में केवल एक मात्रा का भेद है।

लोग चाहते हैं समाज सुखी हो, सर्वत्र शान्ति हो। सुख-शांति क्यों नहीं है? इस प्रश्न पर विचार करते समय सीधा ध्यान अर्थ-तंत्र और राज-तंत्र की अव्यवस्था पर जाता है। यह सत्य है कि वाह्य व्यवस्था का असर होता है, पर व्यक्ति के अपने स्वभाव का असर होता है, उस ओर ध्यान नहीं जाता। यह वाह्य के प्रति जागरूकता और अध्यात्म के साथ आंखमिचौली है। लोग सोचते हैं, अध्यात्म से क्या? उससे न रोटी मिलती है, न कपड़ा और न मकान। रोटी, कपड़ा और मकान जिसके लिए है, वह मनुष्य है और उसका निर्माण अध्यात्म से होता है। जिसके लिए वस्तुएं हैं, उसका यदि निर्माण न हो तो रोटी, कपड़े और मकान का क्या होगा? पदार्थ का अपने आप में मूल्य नहीं है, मूल्य है व्यक्ति का।

शब्दों की चर्चा और शास्त्रों के प्रमाण से मनुष्य जितना पथमूढ़ बनता है, उतना शस्त्र से भी नहीं बनता। कभी-कभी प्रयोग में शास्त्र भी शस्त्र जैसा बन जाता है।

कृष्ण ने पूछा– 'अनायास शस्त्र क्या है?' इस पर नारद ने कहा–

'शक्यान्ददानं सततं, तितिक्षार्जवमार्दवं।
यथार्हप्रतिपूजा च, शस्त्रमेतदनायसम्।।

'विरोधियों को जितना दे सकें, अन्न दें। तितिक्षा रखें– उनके शब्द सुन तत्काल आवेश में न आएं। ऋजुता का व्यवहार करें। मृदुता रखें। बड़ों का सम्मान करें। यह अनायास शस्त्र है, बिना लोहे का शस्त्र है।'

नारद ने कहा– 'इस शस्त्र से आप उनको वश में कर सकते हैं।'

कृष्ण– 'क्या मैं कमज़ोर हूं? क्या मुझमें शक्ति नहीं है, जो उनकी बातों को सहन करुं?'

गाली देने वाला प्रतिक्रिया में गाली इसलिए देता है, 'कि क्या मैं कमज़ोर हूं?' तत्काल अहंभाव उभर आता है। व्यक्ति प्रतिक्रिया में लग जाता है। नारद ने कहा – जो महान् होता है वही सहन कर सकता है।

धुरा आपको चलाना है। जो महान् नहीं, वही सहन नहीं कर सकता। जो आत्मवान नहीं, वह सहन नहीं कर सकता। जो सहाय-सम्पन्न नहीं, वह सहन नहीं कर सकता। क्या आप महान् आत्मवान और सहाय-सम्पन्न नहीं हैं? कमज़ोर व्यक्ति कभी सहिष्णु नहीं बन सकता। सहिष्णु वही बन सकता है, जो शक्तिशाली होता है। यहां पीछे पर्दा है। पर्दे का होना और धूप का न आना – दोनों जुड़े हुए हैं। वैसे ही शक्ति का होना और क्रोध का न होना, दोनों जुड़े हुए हैं।

मानसिक शान्ति के लिए सहिष्णुता आवश्यक है। यह प्रमोद-भावना का बड़ा अंग है। गुणी के गुणों को देख मन में प्रसन्न होना, ईर्ष्या न करना प्रमाद भावना है। जहां सहिष्णुता होगी वहां प्रमोद-भावना का विकास होगा। एक करोड़पति परिवार था, सब तरफ से सम्पन्न। उनमें एक व्यक्ति प्रमुख रूप से काम देखता था, शेष उसके सहयोगी थे। उनके दिल में एक विचार आया। यह तो केवल आज्ञा चलाता है। व्यापार हम करते हैं, पूछ इसकी होती है। असहिष्णुता का भाव आया और सब अलग-अलग हो गए। परिणाम यह हुआ कि जो प्रमुख था, वह कुशल था, इसलिए उसने कुशलता से अपना काम जमा लिया। शेष कठिनाई में पड़ गए।

दूसरों को नीचा दिखाने का भाव भी असहिष्णुता से आता है। एक सेठ के घर दो पंडित आए। एक पंडित कार्यवश इधर-उधर गया। सेठ ने दूसरे से पहले का परिचय पूछा। उसने कहा– 'मेरा अधिक सम्पर्क नहीं है, अभी मिले थे। लगता है यह तो बना-बनाया बैल है।' पहला पंडित आया तो दूसरा किसी कार्यवश बाहर गया। उससे दूसरे पंडित का परिचय पूछा गया तो उत्तर मिला– 'यह तो पंडित क्या है, गधा है।' सेठ ने भोजन के समय एक के सामने चारा और एक के सामने भूसा रख दिया। पंडितों ने अपना अपमान समझा। सेठ ने कहा – 'मुझे तो यही परिचय मिला था।' दोनों पंडितों के सिर झुक गए। किसी भी क्षेत्र में चले जाइए। एक कलाकार दूसरे कलाकार की, एक साहित्यकार दूसरे साहित्यकार की, एक धार्मिक दूसरे धार्मिक की प्रगति को सहन न करे, उसकी प्रशंसा न करे तो क्या कला, साहित्य और धर्म का उत्कर्ष हो सकता है? मनुष्य के मन को शान्त-संतुलित बनाने की प्रक्रिया न होगी तो वह प्राण-शून्य होगा। सारी अच्छाइयों और सारी बुराइयों का उत्कर्ष मन से है। मन की क्षमता को बढ़ाने के लिए सहिष्णुता का विकास आवश्यक है। मन की शक्ति का विकास सहिष्णुता का विकास है। मन की शान्ति का ह्रास सहिष्णुता का ह्रास है।

इंदौर-ज्ञानशिखर। राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम "आध्यात्मिकता द्वारा सुरक्षा" में अपने विचार व्यक्त करते हुए विक्रम सिंह रघुवंशी,डी.एस.पी.ट्रैफिक पुलिस। साथ हैं ब्र.कु.अनीता, ब्र.कु.उषा एवं ब्र.कु.सोनाली।

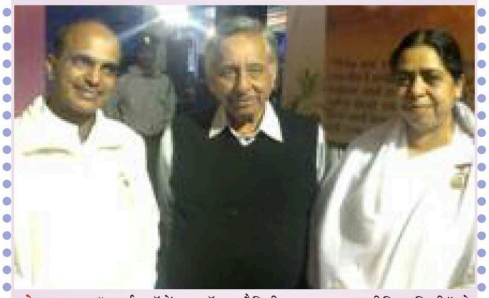

कोलकता। "वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन ह्यूमैनिटी, पावर एण्ड स्पीरिचुएलिटी" के आयोजन के पश्चात् राज्यसभा एम.पी. मणिशंकर अय्यर, ब्र.कु. ई.वी.स्वामीनाथन एवं ब्र.कु.कानन।

पलवल - हरियाणा। ग्रामीण महिला सशक्तिकरण अभियान पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु.राजेन्द्र, ब्र.कु.पूजा, ब्र.कु.स्वाति, ब्र.कु.पूनम तथा अन्य।

पिच्छोड़-म.प्र.। मकर संक्रान्ति के पावन पर्व पर कमलेश्वर महादेव मंदिर में ज्ञान-योग पथ-प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् विधायक के.पी.सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रजनी।

पुणे। ज्ञान चर्चा के बाद विजय कोल्टे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नीलिमा। साथ हैं ब्र.कु.दिलीप, ब्र.कु.विठ्ठल तथा अन्य।

पुणे-कर्वेनगर। नगरसेवक श्याम देशपाण्डे का फूलों से स्वागत करते हुए ब्र.कु.नीरू। साथ हैं आर.टी.ओ. ऑफिसर एम.ए. राणे और जनता बैंक मैनेजर आर.वी.वर्तक।